B.M.E.B.R. Vol. XIX, No. 1-2 , (1998) pp. 34-48

लोकपरम्परागत आयुर्वेदिक औषध द्रव्यों की पहिचान एवं औषधीय पादपों का द्रव्यगुण शास्त्र में समावेश

मायाराम उनियाल

(प्राप्ति 16-12-98)

महर्षि चरक ने अनादिकाल को शाश्वत कहा है, क्योंकि जब से जीव सृष्टि का सृजन हुआ तभी से आयुर्वेद की सत्ता प्रारम्भ हुई। आर्ष ग्रन्थों ने भी यह स्वीकार किया है कि लोक परम्परागत उपयोगी ज्ञान कहीं से भी प्राप्त करना चाहिए, यथा–"**कृत्स्नोहि लोको बुद्धिमतामाचार्यः**" च.वि.अ. ८/१४११ आयुर्वेद के महर्षियों ने अपने दीर्घकाल के परिश्रम और अनुभवों से द्रव्यगुण शास्त्र के मौलिक सिद्धान्तों की स्थापना की जिसके आधार पर कोई भी नवीन द्रव्य उनके सामने आता था तो वे द्रव्यगुण के सिद्धान्तानुसार द्रव्य के नामकरण एवं गुणधर्मों का निर्धारण करते थे।

वर्तमान परिपेक्ष्य में कालक्रम से लुप्त विचारों की खोज या गवेषणा करना या भ्रांत विचारों को संशोधित कर नवीन युक्ति–युक्त विचारों की स्थापना करना अनुसंधान है। भारत में प्राचीन काल से ही मणि–मंत्र एवं जड़ी–बूटियों द्वारा चिकित्सा करने का निर्देश है। उस काल में जड़ी–बूटयों की पहचान दैविक अनुभूतियों द्वारा पशु–पक्षियों द्वारा एवं आकस्मिक प्रयोगों आदि विधियों द्वारा की जाती रही है। औषध अनुसंधान में ऐसे द्रव्यों का परिचय प्राप्त करना है जो द्रव्य पहचान के अभाव से अज्ञात हैं या कतिपय टीकाकारों के मतभेदों एवं पर्यायवाची शब्दों के अनेकार्थ के कारण संदिग्ध हैं या जिनका उल्लेख आयुर्वेदिक ग्रन्थों में सुलभ नहीं है। इन द्रव्यों का आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्तों के आधार पर नामरूप परिचय कर द्रव्यगुणशास्त्र में समावेश किया जाना है।

अतः शीर्षक लेख में लोक–प्रचलित परम्परागत उपयोगी पादपों का वनौषधि सर्वेक्षणों के माध्यम से द्रव्यों की पहचान कर द्रव्यगुण–शास्त्र में समावेश करने का सुझाव प्रस्तुत किया है।

निदेशक, भारतीय कायचिकित्सा संस्थान, पटियाला (पंजाब)